International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.multidisciplinaryjournals.in
ISSN: 2455-4588
Received: 10-08-2023, Accepted: 27-08-2023, Published: 11-09-2023
Volume 8, Issue 3, 2023, Page No. 46-47

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की उत्पत्ति में भारत की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन

पवन कुमार
स्नातकोत्तर, राजनीति विज्ञान विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् सम्पूर्ण विश्व दो शक्तिशाली गुटों अर्थात् अमेरिका तथा सोवियत संघ गुट में विभाजित हो गया था। अतिशीघ्र ही विश्व में सर्वोच्च शक्ति बनने के लिए इनमें शीत युद्ध आरंभ हो गया जो सोवियत संघ के विघटन के समय तक चलता रहा। अमेरिका गुट में अमेरिका, कनाड़ा, फ्रांस, इटली, पाकिस्तान आदि राष्ट्र सम्मिलित थे जबकि सोवियत गुट में रूस, पोलैण्ड, हंगरी आदि शामिल थे। इनमें से कुछ देश ऐसे थे जिन्होंने कुछ ही समय पूर्व स्वतंत्रता प्राप्त की थी। वे इन दोनों गुटों में से किसी की भी सदस्यता ग्रहण नहीं करना चाहते थे। क्योंकि उनका मानना था कि इन देशों की गुटबंदी के चक्कर में पड़ने से उन्हें काफी हानि हो सकती है। अतः ये देश गुट–निरपेक्षता की नीति पर चले। इन देशों में भारत, मिस्त्र, यूगोस्लाविया आदि देश शामिल थे। गुटनिरपेक्षता का अर्थ तटस्थता नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में विभिन्न मुद्दों पर विवेकपूर्ण निर्णय लेते हुए सही और गलत का अंतर करते हुए सदैव सही नीति का समर्थन करना और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाना ही गुटनिरपेक्षता है। इस तरह यह कोई पलायनवादी नीति नहीं है। 1955 ई० में बांडुग सम्मेलन (इण्डोनेशिया) में गुटनिरपेक्षता की संकल्पना सामने आई जो गुटनिरपेक्ष आंदोलन की औपचारिक शुरूआत मानी जाती। गुट निरपेक्ष आंदोलन ने सदैव एक 'स्वतंत्र' राजनीतिक पथ बनाने का प्रयास किया, ताकि सदस्य राष्ट्र को दो महाशक्तियों के वैचारिक युद्ध के बीच फँसने से बचाया जा सके।

मूल शब्दः गुट, शीत युद्ध, विघटन, गुटबंदी, मुद्दे, संकल्पना, औपचारिक, वैचारिक, राजनीतिक पथ

गुटनिरपेक्ष आंदोलन

यह राष्ट्रों की एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है। जिन्होंने निश्चय किया कि वे विश्व के किसी भी पावर ब्लॉक के संग या विरोध में नहीं रहेंगे। इसकी स्थापना अप्रैल 1961 ई० में हुई।। वर्तमान में यह आंदोलन संयुक्त राष्ट्र के बाद विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक समन्वय और परामर्श का मंच है। आज वर्तमान समय में कुल 120 विकासशील देश शामिल हैं।

संस्थापक देश

भारत के प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू
मिस्त्र के पूर्व राष्ट्रपति– गमाल अब्दुल नासिर
युगोस्लाविया के राष्ट्रपति डॉ० सुक्रणों

उद्देश्यः इस संगठन का उद्देश्य गुट–निरपेक्ष राष्ट्रों की राष्ट्रीय स्वतंत्रता, सार्वभौमिकता, क्षेत्रीय एकता एवं सुरक्षा को उनके साम्राज्यवाद, औपनिवेशवाद, जातिवाद, रंगभेद एवं विदेशी आक्रमण, हस्तक्षेप आदि मामलों के विरूद्ध उनके युद्ध के दौरान सुनिश्चित करना।

1. अपनी सम्प्रभुत्ता एवं अखण्डता की रक्षा करना।
2. दोनों पक्षों में तनाव की समाप्ति के प्रयास करना।
3. नव स्वतंत्र देशों को महाशक्तियों के दबाव से सरंक्षण देना।
4. विश्व में शांति बनाए रखना।
5. परमाणु हथियारों का विनाश एवं व्यापक निरशस्त्रीकरण।

गुटनिरपेक्ष नीति अपनाए जाने के कारण

विश्व वैचारिक रूप से पूंजीवादी एवं साम्यवादी गुट में विभाजित था जिसका नेतृत्व क्रमशः अमेरिका एवं सोवियत संघ कर रहे थे। अतः गुटीय राजनीति से अलग रहकर सामाजिक आर्थिक विकास को पूरा करने के लिए गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई गई।
तृतीय विश्व के देश आर्थिक–सामाजिक समस्याओं से ग्रसित थे। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए आर्थिक–तकनीकी विकास जरूरी था। जिनमें ये राष्ट्र सक्षम नही थे। अतः दोनों महाशक्तियों से आर्थिक–तकनीकी सहयोग प्राप्त करने के लिए किसी गुट में न जाना ही एक मार्ग दिखाई पड़ा।
विश्व शांति को बढ़ावा देने एवं शीत युद्ध के दौर में तनावों में कमी लाने के लिए गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाया गया।
औपनिवेशिक शोषण से मुक्ति प्राप्त देशो ने किसी सैन्य संधि में न बंधने के लिए गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन और भारत

भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का संस्थापक और इसके सबसे महत्वपूर्ण सदस्यों में से है तथा 1970 के दशक तक भारत ने इस आंदोलन की बैठकों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। किंतु 1970 के दशक के बाद गुटनिरपेक्ष आंदोलन में भारत की स्थिति बदलने लगी और सोवियत संघ की ओर भारत का झुकाव बढ़ने लगा। जिससे NAM के उद्देश्यों को लेकर छोटे देशों के बीच भ्रम की स्थिति पैदा हो गई। अंततः इससे गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थिति कमजोर हुई और अधिकांश छोटे देश या तो अमेरिका की ओर या फिर सोवियत संघ की और अग्रसर होने लगे।

गुट–निरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता

गुट–निरपेक्ष आंदोलन का विकास शीत युद्ध के दौर में हुआ था। जहाँ गुटीय राजनीति से अलग रहने पर बल दिया गया अब 1990 के बाद सोवियत संघ के विघटन के साथ ही जब शीत युद्ध समाप्त हो गया और गुटीय राजनीति का अंत हो गया तब गुट–निरपेक्ष आन्दोलन की भी प्रासंगिकता नहीं रही इन्हीं तर्कों के आधार पर विद्वानों का एक वर्ग गुटनिरपेक्ष आंदोलन को समाप्त करने की बात करने लगा। यह बात ठीक है कि शीत युद्ध समाप्त हो गया और गुट नहीं रहे किंतु फिर भी गुटनिरपेक्ष आंदोलन का महत्व आज भी बना हुआ है। क्योंकि तृतीय विश्व ने सामाजिक–आर्थिक विकास का जो लक्ष्य निर्धारित किया था वो आज भी जारी है। इतना ही नहीं नवीन चुनौतियों जैसे– नव उपनिवेशवादी शोषण, विकास का समानता मूलक वितरण, निःशस्त्रीकरण, परमाणु भयमुक्त विश्व, पर्यावरण सुरक्षा, संयुक्त

राष्ट्र संघ के पुर्नगठन आदि कार्यों को पूरा करना है और अपनी विदेश नीति को बनाए रखना दरअसल जब तक राष्ट्र मौजूद है और उनकी स्वतंत्र विदेश नीति पर चलने की प्रतिबद्धता है तब तक गुटनिरपेक्ष आंदोलन राजनीति का एक स्थायी तत्व बना रहेगा।

गुट–निरपेक्ष आंदोलन की आलोचना

यद्यपि गुट–निरपेक्ष आंदोलन पिछले 60 वर्षों से सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है फिर भी इसकी कुछ कमियां भी हैं। अनके इतिहासकारों ने कहा है कि यह आंदोलन केवल अवसरवादी तथा काम निकालने की नीति ही बन गया है। कुछ आलोचकों का मानना है कि गुट–निरपेक्षता की नीति सैद्धांतिक रूप से कम व्यवहारिक है। गुट निरपेक्षता सैद्धांतिक रूप से स्वतंत्रता में विश्वास रखता है परंतु इसके राष्ट्रों ने स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई। इसके अलावा यह आत्मनिर्भर न होकर दूसरे देशों पर आर्थिक रूप से निर्भर है। यह किसी को सुरक्षा की गारंटी नहीं दे सकता। यह भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर की समस्या को भी हल करने में असफल रहा। गुट–निरपेक्ष आंदोलन हमेशा गुटबंदी का शिकार भी होता रहा। अमेरिका तथा गुटनिरपेक्ष देशों में आपसी मतभेद हमेशा बने रहे। इन कमियों के बावजूद गुटनिरपेक्ष आंदोलन अभी भी सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि शीत युद्ध के परिणामस्वरूप गुटनिरपेक्ष आंदोलन का उत्थान हुआ था। इस आंदोलन के देशों को तीसरी दुनिया कहा जाता है। अब तक इसके 12 सम्मेलन हो चुके हैं यह काफी हद तक शीत युद्ध के तनाव को कम करने में सफल हो गया था। यद्यपि इसमें कुछ खामियाँ भी है। परंतु इसके बावजूद यह अनेक समस्याओं को सुलझाने में सफल रहा। यह निःशस्त्रीकरण में विश्वास करता है। इसने साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद का विरोध करके स्वतंत्रता तथा समानता पर बल दिया।

संदर्भ सूची

1. K.P. Misra and A.K. Damodaram (ed.) Dynamics of Non-Alignment (Delhi, 1983).
2. K.P. Misra (ed.), Studies in Indian Foreign Policy, 104.
3. वी. पी. दत्तः इंडिया एण्ड द वर्ल्ड, संचार पब्लिशिंग हाउस, 1991।
4. फ्रेंकल जोसफः दी मेकिंग ऑफ फॉरेन पालिसी आक्सफोर्ड यूनिवर्सिदी प्रेस, 1976।
5. एन. एम. खिलानीः रीएलिटीज इन इंडियन फॉरेन पालिसी, नई दिल्ली–1984.
6. गहलौत बी. सिंहः भारतीय विदेश नीति, 2004, नई दिल्ली।
7. मधु लिमिएः प्राब्लम्स ऑफ इंडियाज फॉरेन पॉलिसी, नई दिल्ली, 1986.